।। गर्भ चिंत्रावण ग्रंथ ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ गर्भ चिंत्रावण ग्रंथ लिखंते ||

चिंत्रावण ग्रभावळी || सुणज्यो चित्त लगाय ||

जन सुखदेवजी बोलिया || कसर न राखू काय ||१||

यह गर्भावली याने गर्भ में जो–जो दु:ख होते है उसके बारे में दी गयी चेतावनी है वह सभी लोग चित्त लगाकर सुनो । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि इसे कहने में मैं कुछ भी कसर नही रखता हूँ । ||१||

मेरी बुध तो छुछम हे || मो पर कही न जाय ||

हर गुरू किरपा किजियो || जब सब देहुँ सुणाय ||२||

मेरी बुद्धि तो सुक्ष्म है । मैं सब हकीकत कह नही पाऊँगा । हर याने रामजी और गुरू आपही कृपा करोगे तब सभी कह डालूँगा । ||२||

ग्रभ वास का भेद रे || सब सुण लेज्यो लोय ||

अब सुख देख न भूलियो || अे फिर त्यारी होय ||३||

गर्भ वास का भेद सभी लोग सुन लो । अब यह इस समय का सुख देखकर गर्भ के दुख को मत भूलो । वह गर्भ का दु:ख और भी पुन: तैयार हो रहा है । ||३||

जन सुखिया ग्यानी सुणे || कसके अंतर माय ||

सब सुख छाडे जग का || ले हर पद संभाय ||४||

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि जो ज्ञानी सुनेगे वो निजमन में याने अन्तर मे कसकेंगें । वे संसार के सभी सुख छोड़कर हरपद याने रामजी का पद धारण कर लेगे । ||४||

मुढ मूरख को जीव रे || सुणे न समझे आय ||

जन सुखिया जग सुख मे || देवे जनम गमाय ||५||

और मूढ मुर्ख जीव कान से सुनेगें भी नही और सुने भी तो उसे समझेंगे नही । वे मूढ मुर्ख इस संसार के सुखों में ही अपना जन्म गँवा देते है । ||५||

जनम अमोलक पावियो || जे जाणे को भेव ||

जन सुखिया इण देह मे || मिले देव को देव ||६||

यह मनुष्य जन्म अमोलक यानी जिसका मोल नही है ऐसा मनुष्य जन्म पाकर यदी कोई भक्ती का भेद जाणेगा,तो उसे देवों का भी देव मिल जायेगा । ||६||

अब के मोसर चूकियाँ || लख चोरासी जाय ||

जन सुखिया ज्याँ त्याँ पड़े || ग्रभ वास के माय ||७||

अब इस मनुष्य शरीर का अवसर यदी चूक गया तो चौरासी लाख योनियों में जाकर गर्भ वास का दु:ख भोगेगा तथा चौरासी लाख योनियों मे जहाँ वहाँ गर्भ में पड़ेगा । ||७||

ग्रभ वास की ताप में || काँपे सुर नर देव ||

जन सुखिया भय मान कर ।। लग्या ब्रम्ह की सेव ।।८।।

इस गर्भ वास के ताप से याने तकलीफ से सभी काँपते है । गर्भ में जाने के भय से ब्रम्ह की ध्यान करने लगे । ।।८।।

ब्रम्ह ध्यान मे गर्क हे ।। गले पिण्ड शरीर ।।
जन सुखिया ग्रभ ग्यान सूं ।। मनसो धरे न धीर ।।९।।

वे सभी ब्रम्ह ध्यान में गर्क होकर अपना पिण्ड याने शरीर गलाते है । गर्भ के दु:ख के ज्ञान से यह मन धीर नही धरता । ।।९।।

ताला बेली ऊपजे ।। सुणे ग्रभ की बात ।।
जन सुखिया सब छोड़ दे ।। सकळ जुग की तात ।।१०।।

यह गर्भ की बात सुनकर तळमलाट जैसा पानी के बिना मछली को तळमलाट होती है । वैसे तळमलाट उत्पन्न होती है इस तळमलाट के कारण संसार की सभी ताँत याने सुख लेने की विधीया छोड़ देते है ।।१०।।

सोच करे ग्रभ वास को ।। अे दुख सहया न जाय ।।
जन सुखिया युँ ऊपजे ।। मिले साध सूं आय ।।११।।

इस गर्भवास का दु:ख सहन नही होता है इसलिए गर्भवास में न पड पाये इसकी फिकर करते है । ऐसी फिकीर जिसके मन में उत्पन्न होगी,वो जाकर साधू से मिलेगा । ।।११।।

साध बडा प्रमार्थी ।। इण सम अवरण कोय ।।
जन सुखिया ग्रभ वास की ।। ताप मिटावे जोय ।।१२।।

साधू बहुत ही परमार्थी है । साधू जैसा परमार्थी दूसरा कोई भी नही है । ये साधू गर्भ वास की तकलीफ मिटा देते है । ।।१२।।

अेसा दे गुरू ग्यान रे ।। सब सुख आणंद होय ।।
जन सुखिया ग्रभ वास मे ।। फेर न आवे कोय ।।१३।।

ये साधू ऐसा गुरू ज्ञान देते है कि उनके ज्ञान से मन मे सब सुख और आनन्द हो जाता है । और ऐसे शिष्य गर्भवास में फिर कभी आते नही । ।।१३।।

ब्रम्ह ग्यानी गुरू देव की ।। अे सब बाता होय ।।
जन सुखिया मत भूलज्यो ।। हद गुरू कीया कोय ।।१४।।

ये सभी बाते सब गुरू की या सब साधूंओकी नही है । ये सब बाते सतस्वरुप ब्रम्हज्ञानी गुरू जो है उनकी है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि हद के गुरू धारण करके तथा उनके उपर भरोसा करके गर्भ दु:ख छुटेगें यह कोई समजो मत । ।।१४।।

ब्रम्ह ग्यानी गुरू भेटिया ।। मिले ब्रम्ह मे जाय ।।
जन सुखिया ग्रभ वास मे ।। पड़े कबूं नहि आय ।।१५।।

सतस्वरुप ब्रम्हज्ञानी गुरू मिलेंगे तभी ब्रम्ह याने सतस्वरुप में जाकर मिलोगे । सतस्वरुप

ब्रम्ह में जाकर मिलने के बाद पुन: गर्भ में कभी भी आकर नही पड़ेगें । ।।१५।।

जन सुखिया ग्रभ वास का ।। सोच करे नर लोय ।।
बेद पुकारे च्यार अे ।। इण सम दुख न कोय ।।१६।।

इस गर्भवास की चिन्ता तो सभी मनुष्य लोग और देव करते है । चारो वेदो मे पुकार करके कहा है कि इस गर्भवास के जैसा दूसरा कोई भी दुख नही है । ।।१६।।

मृग जळ संसार हे ।। देखन भूला जाय ।।
जन सुखिया आकार रे ।। सब ही झूठा थाय ।।१७।।

यह संसार मृगतृष्णा जैसा है जैसे हिरण को मृगजल यह पानी न रहते हुए भी पानी दिखाई देता है वैसे ही मनुष्य को यह संसार मृगजल के समान झुठा होते हुए भी सच्चे पाणी सरीखा सच्चा दिखता है । इसलिये इस ससार को देखकर कोई भूल मत । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि जो आकार है,दिखाई देता है,सभी झूठा है याने नाश होनेवाला है । ।।१७।।

आकारी कूं सेविया ।। ग्रभ ताप नहि जाय ।।
जन सुखिया निराकार रे ।। छिन मे देत मिटाय ।।१८।।

जिसने आकार धारण किया है ऐसे आकारी की सेवा करने से गर्भ की ताप जानेवाली नही । गर्भ की तकलीफ याने दु:ख निराकार की क्षणभर सेवा करनेसे सदाकरीता मिट जाती है । ।।१८।।

निराकार की सेव कर ।। आकारी गुरू भाव ।।
जन सुखिया कर भजन रे ।। ब्रम्ह मिलन के चाव ।।१९।।

निराकार की सेवा करो और आकार की यानी आकार धारण किए गुरू से भाव रखो आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि निराकार का भजन करो । और जिस गुरु से निराकार मिला उस गुरू का भाव रखो यही सतस्वरुप ब्रम्ह मिलने की रीती है । ।।१९।।

भजन किया ग्रभ वास की ।। मिटे जम की त्रास ।।
जन सुखिया सब काट कर ।। बसे ब्रम्ह के पास ।।२०।।

भजन करने से गर्भवास की और यम की त्रास मिट जाती है । गर्भवास और यम की त्रास काट कर ये सभी सतस्वरुप ब्रम्ह में जाकर बसते है । ।।२०।।

सब दुख काटया चाहिये ।। ब्रम्ह ग्यान उरधार ।।
जन सुखिया निस दिन रटे ।। चले धम की लार ।।२१।।

यदी तुम सभी दु:ख याने गर्भवास का,नर्क का,यम का,चौरासी लक्ष योनियों का निकालना चाहते हो तो ब्रम्ह ज्ञान हृदय में याने निजमन मे धारण करो और रात-दिन श्वास के साथ रटन करो और सतस्वरुप धाम चलो । ।।२१।।

ग्रभ वास मे आवणो ।। ज्याँ त्याँ हुवे हवाल ।।
जन सुखिया कर भजन रे ।। ग्रभ वास कूं पाल ।।२२।।

गर्भवास में आने पर जहाँ–तहाँ जीव की हालत बेकार होते है तो आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि भजन करो तो गर्भ में आने का छुट जायेगा । ।।२२।।

ग्रभ वास मे दुख घणो ।। अरध मुख मल माय ।।
जन सुखिया यूँ सोच कर ।। रहो राम लिव लाय ।।२३।।

गर्भवास में बहुत ही दु:ख है । मुँह निचे होकर विष्टा में रहता है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि ऐसी फिकर करके,राम नामसे लव लगाकर रहो । ।।२३।।

सुण रे जीव शब्द तुं मोरा ।। ग्रभ वास का कूं दुख तोरा ।।
नो नो मास ग्रभ के माही ।। अर्ध मुख तू झूले जाही ।।२४।।

अरे जीव मेरा शब्द याने ज्ञान तूँ सुन । मैं गर्भवास का तुम्हें दु:ख बताता हूँ । नव महीने तू गर्भ मे नीचे मुँख और उपर पैर करके झूलता रहा । ।।२४।।

मळ मुत्र सब ही ले खावे ।। निस दिन पड्यो नरक मे जावे ।।
जठर अगन की आँच करारी ।। वे दुख सहे सिर पर भारी ।।२५।।

गर्भ में जीव रात–दिन मल–मुत्र खाते रहता और रात–दिन नर्क में पड़े रहता । वहाँ गर्भ में माँ की जठराग्नी की आंच बहुत ही कड़ी होती है । ऐसा बहुत ही दु:ख सिर पर सहन करना पड़ता है । ।।२५।।

सगच्चो रहे ग्रभ के माही ।। पाव पसाऱ्या जावे नाही ।।
ग्रभ वास मे वे दु:ख लीया ।। वे दिन भूल मती तुं जीया ।।२६।।

गर्भ में सिमट कर बांधा हुआ रहता है । वहाँ गर्भ में पैर फैलाया नही जाता है । गर्भ वास में तूं ऐसे–ऐसे दु:ख भोगकर आया है । अरे जीव तूँ गर्भवास के वे दिन मत भूल । ।।२६।।

ग्रभ वास मे करे पुकारा ।। सुण हो सांई सिरझण हारा ।।
दूजा दुख मोहो भुगतावे ।। ग्रभ वास सुं बाहेर ल्यावे ।।२७।।

तूँ गर्भवास में साई से ऐसी पुकार करता रहता था,कि हे साँई तुम मेरी पुकार सुनो,तुम मुझे दुसरे दु:ख जैसे चाहो वैसे भोगने को दो परन्तु इस गर्भवास से मुझे बाहर निकालो । ।।२७।।

सांई त्राय मोह अब लीजे ।। ग्रभ वास सुं बाहेर कीजे ।।
अब तो बे खातर मै हूवा ।। हर हर करूं नहि हूँ जूवा ।।२८।।

स्वामी त्राहिमाम–त्राहिमाम मुझे अब इस गर्भवास से बाहर निकालों । अब तो मैं बेखातर हो गया हुँ । मैं हर–हर भजन करूंगा,भजन करने से दूर नही होऊँगा । ।।२८।।

ग्रभ वास की मती दे त्रासा ।। अब तोरहुँ हरि के पासा ।।
हर की भगत करूं होय गाढो ।। अब के ग्रभ वास सुं काढो ।।२९।।

मुझे गर्भवास का त्रास मत दो । अब तो मैं हरी तुम्हारे पास रहूँगा । मैं अब हर याने रामजी की भक्ती बहुत ही गाढा होकर करूंगा । अब इस बार गर्भवास में से मुझे बाहर निकाल लो । ।।२९।।

अब के बाहर करो बसेरा ।। निस दिन जाप करू हर तेरा ।।
तुम कूं भूल कबू नहि जाऊँ ।। जे हर अबके बाहर आऊँ ।।३०।।

अब मेरा बसेरा बाहर कर दो यानी मैं,हे रामजी,रात-दिन तुम्हारा जाप करूंगा । तुमको मैं कभी भी नही भूलुँगा । यदी मैं रामजी बाहर आ गया तो तुम्हे कभी भी नही भूलुँगा ।३०।।

अेसा बचन ग्रभ के मांही ।। हर सुं कोल किया था याँही ।।
हर कू छाड़ आन नहि ध्याऊँ ।। जे हर अब के बाहर आऊँ ।।३१।।

जीव ने गर्भ में इस प्रकार के वचन दिए व हर याने रामजी के साथ इस प्रकार का करार किया । हर याने रामजी को छोड़कर दूसरे देवताओं का ध्यान,भजन,पूजन नही करूँगा । यदी मैं गर्भ के बाहर आ गया तो रामजी तुम्हारे शिवाय अन्य देवताओं को कभी नही भजुँगा । ।।३१।।

त्राय त्राय अब रहो पुकारी ।। ग्रभ वास का हे दुख भारी ।।
हे हर मुज पर किरपा कीजे ।। ग्रभ वास सुं बाहर लीजे ।।३२।।

त्राहिमाम-त्राहिमाम,अब मैं पुकार कर रहा हूँ । इस गर्भवास का दु:ख बहुत ही भारी है । हे हर हे रामजी मेरे उपर कृपा करो व मुझे इस गर्भवास से मुझे बाहर निकाल दो । ।।३२।।

मै तो दुखी बोत बिध सामी ।। तम सब जानो अंतर जामी ।।
तुम सुं कछु छिपे नी कांही ।। रूम रूम केहो हर माही ।।३३।।

हे स्वामीजी मैं तो बहुत ही तरह से दु:खी हूँ । तुम तो सभी जानने वाले अन्तर्यामी हो ।।३३।।

अंतर की सारी सब जाणो ।। बाहर भीतर सबे पिछाणो ।।
मेरा दुख काहा मै गाऊँ ।। कर किरपा हर बाहर आऊँ ।।३४।।

तुम मेरे अन्दर की सभी बात जानते हो । बाहर की और अंदर की सभी बातें तुम जानते हो । मेरा दु:ख मैं क्या कहूँ?तुम ही हर रामजी कृपा करोगे तब मैं गर्भ से बाहर आऊँगा । ।।३४।।

धन घाटी की ताप करारी ।। किरपा कर हर काड मुरारी ।।
अब खो घाट गेल हे थोरी ।। किस बिध निकल न हुवेगी मोरी ।।३५।।

धन घाटीकी ताप बहुत ही कड़क है । तो हर याने रामजी कृपा करके मुरारी मुझे इस घाट से बाहर निकालो । गर्भ का घाट कठीण अबखा है और बाहर निकलने का रास्ता बहुत ही थोडा याने तंग है,योनी से है बहुत ही तंग रास्ते से अवघड़ घाट में से बाहर जाना पडता है । इसमे से मै किस विधी से,बाहर निकलूगां यह समजता नही जायेगा । ।।३५।।

रूम रूम धूजे सब मेरा ।। प्रथक बिध बाहर क सुंडेरा ।।
आतो अण बण सिर अेसी ।। चंद सुर ग्रिये से तेसी ।।३६।।

इसमें से निकलने के भय से मेरा रोम–रोम काँप रहा है । प्रभक( )विधी बाहर(डेरा करके) ,यह ऐसा तो अणबण याने मेरे न होने जैसी स्थीती सिरपर आयी । जैसे ग्रहण के समय चन्द्रमा और सुर्य को राहू–केतू ग्रासते है वैसी गती मेरी हो गयी है । ।।३६।।

अबखी बेर पड़ी मुज माही ।। तम बिन कोण छुडाय गुसाई ।।
कर किरपा हर बाहर लीजे ।। अगुला गुना बगस सब दीजे ।।३७।।

यह मेरे उपर कठिण संकट का समय आया है तो हे गोस्वामी मुझे इस संकट से तुम्हारे बिना कौन छुड़ायेगा । हर याने रामजी कृपा करके मुझे बाहर करो । मेरे पहले के किए गये गुनाह सभी माफ कर दो और मुझे बाहर निकालो । ।।३७।।

।। इति गर्भ चिंत्रावण ग्रंथ संपूरण ।।